# १. प्रेरणा

*– त्रिपुरारि*

**कवि परिचय :** त्रिपुरारि जी का जन्म ५ दिसंबर १९८८ को समस्तीपुर (बिहार) में हुआ। आपकी प्रारंभिक शिक्षा पटना से, स्नातक शिक्षा दिल्ली से तथा स्नातकोत्तर शिक्षा हिसार से हुई। दिल्ली विश्वविद्‌यालय में अध्यापन कार्य करने के पश्चात वर्तमान में आप फिल्म, दूरदर्शन के लिए लेखन कार्य कर रहे हैं। 'त्रिवेणी' के रचयिता के रूप में आपकी पहचान है । कल्पना की भावभूमि पर यथार्थ के बीज बोते हुए उम्मीदों की फसल तैयार करना आपकी रचनाओं का उद्‌देश्य है ।

**प्रमुख कृतियाँ :** 'नींद की नदी' (कविता संग्रह), नॉर्थ कैंपस (कहानी संग्रह), साँस के सिक्के (त्रिवेणी संग्रह) आदि ।

**काव्य प्रकार :** 'त्रिवेणी' एक नए काव्य प्रकार के रूप में साहित्य क्षेत्र में तेजी से अपना स्थान बना रही है। त्रिवेणी तीन पंक्तियों का मुक्त छंद है। मात्र इन तीन पंक्तियों में कल्पना तथा यथार्थ की अभिव्यक्ति होती है। इसकी पहली और दूसरी पंक्ति में भाव और विचार स्पष्ट रूप से झलकते हैं और तीसरी पंक्ति पहली दो पंक्तियों में छिपे भाव को नये आयाम के साथ अभिव्यक्त करती है। सामयिक स्थितियों, रिश्तों तथा जीवन के प्रति सकारात्मकता 'त्रिवेणी' के प्रमुख विषय हैं।

**काव्य परिचय :** प्रस्तुत त्रिवेणियों में कवि ने मनुष्य के जीवन में माँ के ममत्व और पिता की गरिमा को व्यक्त करने के साथ ही 'जिंदगी की आपाधापी में जुटे माता-पिता से बच्चों को स्नेह भी टुकड़ों में मिलता है', इस सच्चाई को भी उजागर किया है। निराशा के बादलों के बीच आशा का संचार करते हुए कवि कहते हैं कि ठोकर खाकर जीने की कला जो सीख लेता है, दुनिया में उसी की जय-जयकार होती है। सुख-दुख की स्थिति में स्थिर रहना ही मनुष्य की सही पहचान है।

माँ मेरी बे-वजह ही रोती है
फोन पर जब भी बात होती है
फोन रखने पर मैं भी रोता हूँ।

सख्त ऊपर से मगर दिल से बहुत नाजुक हैं
चोट लगती है मुझे और वह तड़प उठते हैं
हर पिता में ही कोई माँ भी छुपी होती है।

मेरे ऑफिस में महीनों से मेरी दिन की शिफ्ट
तेरे ऑफिस में महीनों से तेरी रात की शिफ्ट
नन्हे बच्चों को तो टुकड़ों में मिले हैं माँ-बाप

उगते सूरज को सलामी तो सभी देते हैं
डूबते वक्त मगर उसको भुला मत देना
डूबना-उगना तो नजरों का महज धोखा है।

चलते-चलते जो कभी गिर जाओ
खुद को सँभालो और फिर से चलो
चोट खाकर ही सीख मिलती है।

चाहे कितना भी हो घनघोर अंधेरा छाया
आस रखना कि किसी रोज उजाला होगा
रात की कोख ही से सुबह जनम लेती है।

कर्ज लेकर उमर के लम्हों से
बो दिए मैंने बीज हसरत के
पास थी कुछ जमीं खयालों की।

ये न सोचो कि जरा दूर दिखाई देगा
एक ही दीप से आगाज-ए-सफर कर लेना
रोशनी होगी जहाँ पर भी कदम रखोगे।

अपनी आँखों में जब भी देखा है
एक बच्चा-सा खुद को पाया है
कौन कहता है उम्र बढ़ती है?

आँसू-खुशियाँ एक ही शय हैं, नाम अलग हैं इनके
पेड़ में जैसे बीज छुपा है, बीज में पेड़ है जैसे
एक में जिसने दूजा देखा, वह ही सच्चा ज्ञानी।

चाहे कितनी ही मुश्किलें आएँ
छोड़ना मत उम्मीद का दामन
नाउम्मीदी तो मौत है प्यारे।

**('साँस के सिक्के' त्रिवेणी संग्रह से)**

० 

## शब्दार्थ :

**घनघोर** = घना

**हसरत** = चाह, इच्छा

**आगाज-ए-सफर** = यात्रा का आरंभ

**शय** = वस्तु, चीज

## स्वाध्याय

### आकलन

१. सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

(अ) कारण लिखिए –

(१) माँ, मेरी आवाज सुनकर रोती है –

(२) बच्चों को माता-पिता का प्यार टुकड़ों में मिलता है –

(३) कवि की उम्र बढ़ती ही नहीं है –

(आ) लिखिए –

परिणति
- चोट खाने की ......................
- अंधेरा होने पर भी आस रखने की ......................
- एक ही दीप से सफर आरंभ करने की ......................

### काव्य सौंदर्य

२. (अ) ममत्व का भाव प्रकट करने वाली कोई भी एक त्रिवेणी ढूँढ़कर उसका अर्थ लिखिए।

(आ) निम्न पंक्तियों में से प्रतीकात्मक पंक्ति छाँटकर उसे स्पष्ट कीजिए –

(१) चलते-चलते जो कभी गिर जाओ

(२) रात की कोख ही से सुबह जनम लेती है

(३) अपनी आँखों में जब भी देखा है

### अभिव्यक्ति

३. (अ) पालनाघर की आवश्यकता पर अपने विचार लिखिए।

(आ) नौकरीपेशा अभिभावकों के बच्चों के पालन की समस्या पर प्रकाश डालिए।

## रसास्वादन

४. आधुनिक जीवन शैली के कारण निर्मित समस्याओं से जूझने की प्रेरणा इन त्रिवेणियों से मिलती है, स्पष्ट कीजिए।

## साहित्य संबंधी सामान्य ज्ञान

५. जानकारी दीजिए :

(अ) 'त्रिवेणी' काव्य प्रकार की विशेषताएँ –

(१) ..................................................................

(२) ..................................................................

(आ) त्रिपुरारि जी की अन्य रचनाएँ –

..................................................................

..................................................................

### रस

काव्यशास्त्र में आचार्यों ने रस को काव्य की आत्मा माना है। विभाव, अनुभाव, व्यभिचारी (संचारी) भाव और स्थायी भाव रस के अंग हैं और इन अंगों अर्थात तत्त्वों के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है।

साहित्यशास्त्र में नौ प्रकार के रस माने गए हैं। कालांतर में अन्य दो रसों को सम्मिलित किया गया है।

| रस | – | स्थायी भाव | रस | – | स्थायी भाव |
|---|---|---|---|---|---|
| (१) शृंगार | – | प्रेम | (७) भयानक | – | भय |
| (२) शांत | – | शांति | (८) बीभत्स | – | घृणा |
| (३) करुण | – | शोक | (९) अद्भुत | – | आश्चर्य |
| (४) हास्य | – | हास | (१०) वात्सल्य | – | ममत्व |
| (५) वीर | – | उत्साह | (११) भक्ति | – | भक्ति |
| (६) रौद्र | – | क्रोध | | | |

**करुण रस :** किसी प्रियजन या इष्ट के कष्ट, शोक, दुख, मृत्युजनित प्रसंग के कारण अथवा किसी प्रकार की अनिष्ट आशंका के फलस्वरूप हृदय में पीड़ा या क्षोभ का भाव उत्पन्न होता है, वहाँ करुण रस की अभिव्यंजना होती है।

उदा. – (१) वह आता –
दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता।
पेट – पीठ दोनों मिलकर हैं एक,
चल रहा लकुटिया टेक
मुट्‌ठी भर दाने को भूख मिटाने को,
मुँह फटी झोली फैलाता।

**– सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'**

(२) अबला जीवन हाय ! तुम्हारी यही कहानी,
आँचल में है दूध और आँखों में पानी।

**– मैथिलीशरण गुप्त**